शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -11
September
2024

लोकपर्व में सामाजिकता का समन्वय

(बुंदेलखंड के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अर्चना दुबे
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

बुंदेलखंड के लोकजीवन में लोक पर्व त्योहार में अधिकतर शुभकार्य उत्तरायण अर्थात सूर्य के उत्तरायण पर होने पर, साथ ही मुहूर्त का विशेष ध्यान रखा जाता है! विज्ञान की दृष्टि से भी लोकपर्व महत्वपूर्ण है! प्रकृति की पूजा जिसमें पर्वत, नदियां, सरोवर और वृक्षों की पूजा भी की जाती है। अनेक लोक त्योहार जो कि बुंदेलखंड में मनाए जाते हैं उनमें सामाजिकता का संबंध होता है इसमें नौरता, सुआटा, टेसू, अकती इत्यादि विशिष्ट पर्व है, जिसमें पर्व उत्सव के साथ ही खेल-खेल में बालक-बालिकाओं को सामाजिक जीवन क्षेत्र में उतरने के पूर्व का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी प्रकार कजरियां जिसे भुजरियां भी कहा जाता है, जिसमे बिना किसी भेदभाव के कजलियाँ देना और उसी प्रकार से स्वीकृत करना सामाजिक समन्वय समरसता को प्रदर्शित करती है। दशहरे में रावण को सामाजिक बुराई के रूप में जलाना और सभी को पान खिलाकर गले मिलना, एक दूसरे एवं सभी वर्गों के प्रति प्रेम और समरसता का प्रतीक है। लोकत्योहार हमारे सामाजिक जीवन को सुसंस्कृत और संपन्नता प्रदान करते है।

बीजशब्द

लोकपर्व, त्यौहार, संस्कृति, सामाजिकता

प्रस्तावना

भारतीय लोक समाज की जीवनशैली में अत्यधिक सामानता देखने को मिलती है परंतु उसमें आंचलिकता और लोकत्व का समावेश से और भी अधिक विशेषता बना देता है। लोकजीवन के सांस्कृतिक पक्ष में लोक संगीत, रीति-रिवाज, पर्व, व्रत, पूजन, उत्सव एवं अनुष्ठान साथ

ही लोकदेवता एवं ग्रामदेवता का पूजन, मेले व बाजार आदि का समावेश सामाजिक समरसता लोकसंस्कृति को और भी अधिक उत्कृष्ट बनाती है। बुंदेलखंड की लोकधारा जो की वैदिककाल से प्रवाहित हो रही है, अपने लोकपर्व एवं परंपराओं के माध्यम से समाज के सभी वर्गों में समरसता बनाए हुए है। बुंदेलखंड का लोकजीवन अत्याधिक सुसंस्कृत एवं उत्सव से भरा हुआ है और लोकव्याप्त परंपराएं लोकपर्व ही लोक संस्कृति को जीवित रखती हैं जो की आचरण में न आने रहने पर विलुप्त होना संभावित। बुंदेली लोक संस्कृति में बालक-बालिकाओं को लोकपर्व के माध्यम से प्रारंभिक अवस्था से ही जीवन यात्रा की दीर्घकालिक तैयारी कला एवं संगीत के प्रति अभिरुचि साथ ही सौंदर्य बोध का विकास करवाया जाता है। बुंदेली लोकपर्व में सामाजिक संघर्ष के साथ ही मृदुल समरसता एवं समृद्धि का समन्वय की झलक देखने को मिलती है। जीवन के अनेक भावी कार्यों को क्रियात्मक ढंग से प्रशिक्षण की भावना बुंदेली लोकजीवन से प्रतिबिंबित होती है जिसमें अकती और सुआटा विशेष रूप से उल्लेखनीय है अकती जो कि अक्षय तृतीया के रूप में पूरे देश में मनाई जाती है परंतु बुंदेलखंड के बालक-बालिकाओं द्वारा कलात्मक ढंग से बनाई गई पुतरा-पुतरियाँ सौंदर्य बोध सृजन क्षमता कलाप्रियता का अद्भुत उदाहरण है वर्तमान में डॉलमेकिंग आर्ट का चलन आ रहा है जबकि बुंदेलखंड में यह कलायुगों-युगों से विकसित हो चुकी है। इस अवसर पर गाए जाने वाले गीत विवाह उन्मुख कुमारियों को लज्जा शालीनता एवं प्रिया के प्रति अनुराग का प्रति बिंब करते हैं। इसी प्रकार सुआटा दीर्घकालिक क्रियात्मक उपासना है। मामूलिया, सुआटा, नौरता झिंझिया और टेसू इन पांचों से समन्वित खेल बालक–बालिकाओ में कल्पना शीलता को विकसित करना प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना एवं सौंदर्य बोध व कला के प्रति प्रेम बढ़ाने का उपक्रम है।

शोध का उद्देश्य

लोकपर्व एवं त्यौहार जीवन को सरस बनाते हैं साथ ही उमंग और उल्लास के रंगों से भर देते हैं प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न है-

1-लोक त्योहारों में व्याप्त सामाजिकता का अध्ययन करना।

2- विलुप्त प्राय लोकपर्वों के प्रति जागरूकता लाना।

3- बुंदेली लोकपर्व में भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक दर्शन का अध्ययन।

शोध प्रविधि

बुंदेलखंड की लोकपर्वों में सामाजिकता एव समरसता के समन्वय के अध्ययन हेतु गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया।

लोक त्यौहार पर्व क्या है

प्रतिवर्ष किसी एक निश्चित तिथि में मनाए जाने वाला किसी भी प्रकार का धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन उत्सव जिसमें सभी मिल कर सामूहिक रूप से उत्सव मनाते हैं आयोजन कहलाता है। उत्सव पर्व या त्योहार किसी समुदाय में मनाए जाने वाला एक आसाधरण आयोजन है जिसमें उस समुदाय और उसके धर्म व संस्कृति के कुछ विशिष्ट पहलुओं पर केंद्रित होता है। उत्सव व्यवहार में पारंपरिक लोककला संगीत के साथ ही उल्लास मनाया जाता है। उत्सव संस्कृत का शब्द है जिसका तात्पर्य है त्योहार और उससे जुड़े उत्सव से है। उत्सवों को मंदिर से जुड़े विशिष्ट धार्मिक त्योहारों के रूप में संदर्भित किया जाता है। उत्सव त्योहारों का मूल्य उद्देश्य धार्मिक पहलुओं से अधिक सामाजिक यानी समाज के साथ मिलकर उत्सव-उल्लास मनाना और प्राकृतिक प्राकृतिक तत्वों को धन्यवाद करना होता है। विभिन्न जातियों और जनजातियों के लोग इस प्रकार के त्योहारों का आयोजन एक साथ मिलकर करते हैं। त्योहारों एवं उत्सव अक्सर विशिष्ट सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए काम करते हैं, विशेष रूप से स्मरण उत्सव या देवताओं या संतों को धन्यवाद देने के संबंध में मनाए जाते हैं। अतः उन्हें संरक्षण उत्सव कहा गया है। वे उत्सव या त्योहार जो किसी संस्कृति या जातीय विशेष पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे वास्तव में समुदाय के प्रति उनकी परंपराओं के बारे में सूचित करना चाहते हैं। इस प्रकार के आयोजन परिवार के बीच में एकता का साधन प्रदान करती है। लोक उत्सव एक व्यक्ति के मानने का उत्सव या त्योहार नहीं होता वरन् इसमें अनेक की भागीदारी आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति में एक देव और एक दानव होता है सामूहिकता से व्यवहार में उसका दानव छिप जाता है और उसके अंदर का देवता आ जाता है। उदाहरण के तौर पर होली में कीचड़ डालना, मुख को बदरंग

करना, साथ ही गधे पर सवारी करना गलियों में घूमते हुए गाली गलोज करना, इन सब से पशु प्रवृत्ति त्रस्त हो जाती है और आपसी प्रेम की सदवृति व्यक्ति के अंदर में जाग जाती है। इस प्रकार से यदि देश के नागरिकों का दानवत्व इस प्रकार के लोक उत्सव के माध्यम से मर्गीकृत होकर बदल जाता है तो निश्चित रूप से इन लोक उत्सव की उपयोगिता है।

लोकपर्व त्यौहार का ऋतु अनुसार वर्गीकरण

बुंदेलखंड आदिकाल से ही लोक उत्सव का प्रदेश रहा है। बुंदेलखंड के जनमानस के लोकजीवन में उत्सव पूजा-पाठ, जप –तप इत्यादि समाए हुए हैं। पूजापाठ तो व्यक्तिगत ही होते हैं, परंतु लोक उत्सव समाज के द्वारा ही मनाए जाते हैं। इसलिए लोक उत्सव पर्व त्यौहार व्यक्ति प्रधान नहीं होते वरन सामाजिक होते हैं। यहां के लोक उत्सव पर्व का मानवीय पक्ष सामाजिकता और सामूहिकता व्यवहारों और उत्सवों को मंगलदायक बनता है। लोकपर्व उत्सव, उत्साह, उमंग एवं मंगल की सामूहिक आस्था एवं विश्वास को भी समायोजित करते हैं। बुंदेलखंड वन एवं कृषि की प्रधानता वाला क्षेत्र है यहां के लोक त्यौहार एवं उत्सव पर ऋतुओं की अत्यधिक प्रभाव पड़ते हैं बुंदेली उत्सव को ऋतु के अनुसार वर्णित करें तो इस प्रकार बताया जा सकता है -

वसंत ऋतु में प्रचलित त्यौहार -

वसंत ऋतु में मनाए जाने वाले लोक त्योहारों में गणगौर पूजन, श्रीनवदुर्गा एवं श्रीरामजन्मोत्सव इत्यादि हैं। वसंत ऋतु में बुंदेलखंड क्षेत्र के जवारों का मेला और टीकमगढ़ जिले में स्थित अक्षरूमाता का मेला भी आयोजित किया जाता है।

ग्रीष्म ऋतु में प्रचलित त्यौहार -

ग्रीष्म ऋतु में अक्षय तृतीया का त्यौहार ही प्रमुख रूप से बुंदेलखंड में प्रचलित है

वर्षा ऋतु में प्रचलित त्यौहार -

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -11
September
2024

वर्षा ऋतु में सर्वाधिक त्यौहार एवं मेलों का आयोजन होता है। वर्षा ऋतु में प्रायः वर्षा के कारण कृषक अपने कृषि संबंधी कार्य से मुक्त होते हैं अतः इस ऋतु में सर्वाधिक त्योहार मनाए जाते हैं। जैसे कि कान घूसे पूने , सावन तीज, नागपंचमी, भुजरियां का मेला एवं रक्षाबंधन का त्योहार इनके अतिरिक्त वर्षा ऋतु में अन्य त्योहारों में है हरछठ, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, हरितालिका, श्रीगणेश जन्मोत्सव, संतान सप्तमी, महालक्ष्मी, जल विहार का मेला, मामूलिया का पूजन एवं सुआटा इत्यादि।

शरद ऋतु के प्रचलित त्यौहार -

शरद ऋतु में मध्यम शीतलता के साथ लोक त्योहारों की उमंग उत्साह लोकजीवन को समरसता मंगलभाव से भर देता है। शरद ऋतु के त्योहारों में कार्तिक स्नान का मेला, दीपावली, गोवर्धन की पूजा, भाई दूज, बैकुंठ चतुर्दशी इत्यादि मंगल दायक सामाजिक उत्सव है।

हेमंत ऋतु के प्रचलित त्यौहार -

हेमंत ऋतु में लोक उत्सव एवं त्योहार मनाए जाते हैं जिनमें संकटव्रत, श्रीकाल भैरव जयंती, श्रीराम विवाह पंचमी मेला इत्यादि सामाजिक मंगलदायक लोक त्योहार हैं।

शिशिर ऋतु में प्रचलित त्यौहार -

शिशिर ऋतु में बुंदेलखंड में प्रचलित लोक त्यौहार जिनमें मकर संक्रांति का मेला, भरभरात का पर्व, होली का उत्सव, शिवरात्रि, उन्नाव का फाग मेला, खुजराहो के सांस्कृतिक उत्सव मेला एवं करुला पाँचे आदि लोक पर्व सामाजिक सांस्कृतिक आनंद उत्सव के लोकप्रिय त्यौहार हैं।

बुंदेलखंड के प्रमुख लोक त्यौहार एवं सामाजिकता -

टेसू बुंदेली लोक त्यौहार

यह बुंदेलखंड के बच्चों का खेल परक पर्व है। इस लोक पर्व में टेसू नामक एक वीर बालक है जो कि अपने वैभव शौर्य और बाल सुलभ अड़ियलपन और संप्रदाय चौथ वसूलने की प्रवृत्ति का चित्रण प्रस्तुत करता है। हालांकि टेसू के मूल स्थान का उल्लेख ऐतिहासिक ग्रंथों में नहीं मिलता है, परंतु लोक कथाओं किवदंतियों में उनके शौर्य प्रसंग पाए जाते हैं। बालक टेसू खेल पर्व अश्विनी शुक्ल शुक्ल अष्टमी से शरद पूर्णिमा तक चलता है। लोक कथाओं में टेसू के स्वरूप की जो दिलचस्प झलकियां हैं। दो लोककथाओं को ही यदि हम लेते हैं जिनमें एक टेसू रक्षक है और दूसरे में प्रेम आसक्त है सत्यता के अतिरिक्त इस लोक कथा के आधार पर मनाए जाने वाला यह लोक पर्व चिरकाल से किशोर किशोरियों के मनोरंजन और विवाह संस्था संबंध ज्ञानवर्धन का व्यावहारिक अभ्यास करती हैं। टेसू गीत या खेल की अवधि शारदीय नवरात्रि से अश्वनी पूर्णिमा तक चलती है। कहीं-कहीं अष्टमी से चतुर्दशी तो कहीं पूर्णिमा तक खेली जाती है। टेसू के खेल या गाने में अमीर गरीब का अंतर नहीं होता इसमें धनी के बेटे भी टेसू खेलना पसंद करते हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र में इंतजार होता है कि कब क्वाँर का महीना आए और टेसू का आनंद लिया जाए।

मामूलिया बुंदेली लोकपर्व

बुंदेलखंड के लोक उत्सव में मामूलिया एक अनोखा पर्व है। मामूलिया को महाभूलि या महुलिया अलग-अलग नाम से जाना जाता है। मामूलिया लोकपर्व के खेल नारी जीवन के सुख-दुख और नारी सौंदर्य दोनों का संयुक्त प्रतिनिधित्व करता है। बुंदेलखंड में भाद्र मास में और कहीं-कहीं आश्विन मास में कृष्ण पक्ष में मामूलिया के गीत में खेल खेलते हुए यह लोक त्योहार मनाया जाता है। यह संध्या के समय गाय के गोबर से चौकोर लीपकर चौक बनाकर बेर या बाबुल की कांटों वाली डाल को फूलों से सजाया जाता है। फूलों से सजाकर लाल कपड़ा डाला जाता है जिसे नारी का स्वरूप माना जाता है। चने, ज्वार के फूल, कचरिया आदि का प्रसाद लगाकर उसकी पूजा करती हैं। सभी मामूलिया के दर्शन करते हैं और विदा के लिए बड़े बुजुर्ग धन देते हैं। अंत में मामूलिया के गले मिलकर विदा करते हैं और उसे समीप स्थित नदी या तालाब में विसर्जित कर दिया जाता है। इस मामूलिया में स्त्री के जीवन का दर्शन निहित होता है। जिस प्रकार बेरी का वृक्ष बिना किसी विशेष पोषण के,

देखभाल के और फल और फूल देने की क्षमता रखता है, उसी प्रकार स्त्री भी अपने परिवार को सद्गुणों के फल से संतान रूपी फल देती है और कांटों के समान प्रहरी बनाकर अपने परिवार को सुरक्षा प्रदान करती है। मामूलिया में नारीत्व की विशेषता का बोध होता है जैसे पुष्प रूपी पुण्य की कोमलता व सौंदर्य एवं कांटों की प्रकृति संघर्ष शीलता एवं वेदना का बोध कराती है वहीं फलों से सृष्टि, उदारता के भाव जो नारीत्व में निहित है इन्हीं गुणों के साथ ही पतिव्रत की साधना हेतु पूर्णता तत्पर रहती है।

"मामूलिया के आ गई लीलिबौआ

चमक चली मोरी मामूलिया"

नौरता बुंदेली लोकपर्व

बुंदेलखंड के गांव में अश्वनी माह में नवरात्रि में नौरता नामक खेल पारक पर्व अत्यंत सरल और धार्मिक भाव से खेला जाता है। बुंदेलखंड के ग्रामीण अंचल में कन्याओं के द्वारा खेला जाने वाला यह अनुष्ठान पूर्ण खेल पर्व है, जो की अश्वनी शुक्ल की प्रतिपदा से नौ दिन तक चलता है। कन्याएं मिट्टी से बनी सुआटा की पूजा करतीं हैं । एक चबूतरे में दैत्यभूत का रूप दिया जाता है साथ ही सूर्य प्रभा की संरचना भी बनाई जाती है। नवरात्रि की प्रतिपदा से रोज नौरता के आस-पास सुंदर सी चौक पूरी जाती है जो कि स्वयं तैयार किए गए रंगों से बनाते हैं। प्रथम दिवस से चौथ तक दैत्य पूजन होता है और पंचमी से नवमी तक गौरी पूजन होता है। यह उत्सव ब्रह्मचर्य कन्याओं में कर्तव्य बोध को जाग्रत करता है। विवाह उपरांत कन्या के दूसरे घर जाना होता है उसके उत्तर दायित्व में भी वृद्धि होती है। कन्या अपने भावी जीवन का प्रशिक्षण इसी प्रकार के लोक उत्सव के द्वारा ही प्राप्त करती थी। सुआटा में सात दिन तक गीतों का क्रम चलता रहता है और आठवें दिन भाई की कांय उतारती हैं कांय गिरने से तात्पर्य है कि भाई बंधुओ के हित मंगल कामना करना। भासंकू होता है जिसमें मीठे और नमकीन पकवान बनाकर अंतिम दिन पूजन करना होता है। यौवन की देहरी पर बैठी कन्या शक्ति संचित करती है कि जीवन में उसे कोई सुआटा जैसा रक्षा परेशान ना करें इस प्रकार के लोकपर्व द्वारा गृहस्थ संस्कृति के यथार्थ से अभ्यास के द्वारा सामाजिकता का अंकुर प्रस्फुटित किया जाता है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -11
September
2024

कुनघु सूपूने बुन्देली पर्व

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को बुंदेलखंड के घरों में कुनघु सूपूने का त्यौहार मनाया जाता है। यह घर की वधुओं के सम्मान का प्रतीक लोकपर्व है, इसमें घर की बुजुर्ग महिला घर के चार कोनों में पुतलियां चित्रित करती है और उनकी चंदन, कुमकुम, अक्षत व पुण्य पुष्प अर्पित करके गुड़ घी का नैवेद्य अर्पण करके आरती करती है, इसमें वह प्रार्थना करती है कि हे परमेश्वरी बहू! मेरे घर में लक्ष्मी बनाकर धन-धन एवं संतान से इस घर को मंगल में बना देना। इस प्रकार कुनघु सपूने भारत की उसे चेतन को प्रदर्शित करती है कि जहां नारियों की पूजन होती है वहां देवता निवास करते हैं।

कजरिया बुंदेली लोकपर्व

कजरिया जिसे भुजरियां भी कहा जाता है बुंदेलखंड में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। श्रावण शुक्ल की नवमी को महिलाओं का समूह खदान का पूजन करके अच्छी मिट्टी का संग्रह कर घर लाती हैं। जिसे छेवलेके पत्तों से दोनों बनाकर गेहूं और जौ मिलकर बोदिए जाते हैं। इनको प्रतिदिन दूध पानी से सींचा जाता है। कुछ समय उपरांत गेहूं और जौ की पीले रंगकी पौध निकल आती है। बुंदेलखंड के कुछ स्थानों में सावन की पूर्णिमा को और कुछ स्थानों में भादो की प्रतिपदा को तालाब के किनारे इनका पूजन करके खोंटा जाता हैं। इसके बाद इनका नदी तालाब मे विसर्जन कर दिया जाता। तालाब से लौटते समय रास्ते में जनसमूह पथ के किनारे पर खड़ा रहता है स्त्रियाँ बिना किसी भेदभाव के सभी को कजरिया देती जाती हैं और लेने वाले इन्हें माथे से लगाकर इनका सम्मान करते हैं। कजरियों के बोने, खोटने और देनेमें भेदभाव नहीं करते। इसमें सभी समुदाय के लोग सम्मिलित होते हैं। बुंदेलखंड का यह त्यौहार परस्पर स्नेहप्रेम और सौहार्द का प्रतीक है साथ ही यह हरित क्रांति की पूजा का उत्सव है।

निष्कर्ष

भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक दर्शन की मूल इकाई लोकपर्व लोक सांस्कृतिक धरोहर ही है। लोकपर्व उत्सव प्रायः लोकजीवन के उमंग उल्लास के क्षणों का सुखद पहलू है। लोकजीवन यूं

तो बहुत ही सहज सरल और स्वाभाविक होता है, परंतु भारतीय लोकजीवन या लोकसमाज में दैनिक जीवन की दिनचर्या में ही त्योहारों के लिए स्थान दिया जाता है। बुंदेलखंड में तो प्रतिमाह या एक माह में बहुत दिनों तक लगातार पर्व उत्सव चलता रहता है, जिसमें परिवार के सभी सदस्यों की किसी न किसी रूप में भागीदारी होती है। बुंदेलखंड के अनेक त्योहारों में बच्चों के द्वारा भी खेल-खेलकर त्यौहार उत्सव मनाए जाते हैं जिनमें मामूलिया, टेसू, नौरता इत्यादि मुख्यपर्व है। बुंदेलखंड के लोक त्योहारों में सामाजिकता का समावेश होता है और जब यह बालक बालिकाओं द्वारा खेल परक पर्व के रूप में मनाया जाता है तो यह एक प्रकार से बहुत ही सहज और सरल तरीके से सामाजिक जीवन का प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में यह लोकपर्व विलुप्त प्राय स्थिति में होने के कारण हमारी वर्तमान पीढ़ी के बालक बालिकाओं में वास्तव में सामाजिकता का अभाव देखने को मिलता है। वर्तमान पीढ़ी मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया के भंवरजाल में फंसकर एकांकी हो गई है। इस प्रकार के अध्ययन की उपदेयता और भी अधिक होगी जब आज की पीढ़ी अपनी सहज, सरल, सांस्कृतिक लोक विरासत का आनंद उतनी सहजता और उमंग के साथ उठाएं और सामाजिक सामंजस्य, प्रेम, सौहार्द के साथ अपना सामाजिक विकासक रें।

संदर्भसूची -

1. https://bundelkhand.!n/bundelkhand-ek-sanskr!t!k-par!chay/publ!c-l!fe-of-bundelkhand
2. https://!gnca.gov.!n/co!lnet/bund0019.htm
3. https://spandansah!tya.blogspot.com/2010/07/blog-post/
4. https://bundel!!jhalak.com/bundel!-lok-tyohar/
5. https://bundel!jhalak.com/bundelkhand-ka-lok-j!van/
6. https://h!.m.w!k!ped!a.org/w!k!/
7. बुंदेलखंड की संस्कृति और साहित्य- श्रीराम शर्मा हयारण "मित्र"